शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2013

भारत-चीन सीमा विवादः एक विहंगावलोकन

डा.लखन सिंह कुशरे
सहायक प्राध्यापक, सैन्य विज्ञान
शासकीय आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, जबलपुर

शोध संक्षेप

सीमाएं कृपाण की धार के सदृश हैं जिस पर राष्ट्रों की शान्ति एवं युद्ध, मृत्यु अथवा जीवन की डोर लटकती रहती है। कर्जन का यह कथन कितना सटीक है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में कुछेक अपवाद को छोड़कर राज्यों के बीच सीमा विवाद एक महत्वपूर्ण उभयनिष्ट कारक रहा है। ऐतिहासिक स्रोतों से पता चलता है कि भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापारिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक सम्बन्ध पिछले लगभग ढाई हजार वर्षों से रहे हैं। आधुनिक साम्यवादी चीन का उदय सन् 1949 में हुआ। अपनी स्वतंत्रता के बाद प्रारम्भ से ही चीन ने विस्तारवादी नीति का अनुसरण किया है। भारत और चीन के मध्य स्थित स्वतंत्र तिब्बत राज्य पर सन् 1951 में एकतरफा कार्यवाही कर चीन ने उस पर कब्जा कर लिया। जिससे चीन की स्थलीय सीमा भारत से सट गई और यहीं से भारत-चीन के बीच सीमा विवादों का जन्म हुआ। चीन भारत के उत्तर पूर्वी राज्य अरुणाचल प्रदेश और उत्तर पश्चिम स्थित लद्दाख सहित सीमावर्ती क्षेत्रों के कई इलाकों पर अपना दावा कर रहा है। सन् 1962 के युद्ध के मूल में सीमा विवाद ही था जिसके द्वारा चीन भारत की 50 हजार वर्ग किलोमीटर जमीन पर कब्जा कर चुका है।

प्रस्तावना

हाल के दिनों में एक बार पुनः लद्दाख में 17 हजार फीट की ऊँचे बर्फीले एवं दुर्गम पर्वतीय क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर भारतीय क्षेत्र में चीनी घुसपैठ से भारत और चीन के बीच राजनीतिक एवं सैनिक तनाव बना रहा। सन् 1962 की कड़वी यादों को पीछे छोड़कर विशेषकर लगभग पिछले दो दशकों से दोनों देशों के बीच सभी स्तर पर सामान्य हो रहे आपसी रिश्ते पर यह घटना प्रश्नचिह्न लगाती है। चीनी विश्वासघात उसकी विस्तारवादी मानसिकता का द्योतक है। दरअसल 15 अप्रैल 2013 को सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण लद्दाख के उत्तर-पूर्व में स्थित देपसांग घाटी के दौलत बेग ओल्डी (डीबीओ) सेक्टर में करीब 50 की संख्या में चीनी सैनिक वास्तविक नियन्त्रण रेखा यानि एलओसी को पार करते हुए भारतीय सीमा क्षेत्र में 19 किमी तक अन्दर घुस आये थे और पांच टेंट गाड़ दिये। भारत के बार-बार कहने पर भी चीनी सैनिक न तो घुसपैठ की बात कबूल रहे थे और न ही इलाका खाली करने के लिए राजी थे। भारतीय सेना ने भी चीनी सेना की ओर रुख करके 300 मीटर की दूरी पर अपने टेंट गाड़ दिये थे। यह बहुत तनावपूर्ण तथा उत्तेजनापूर्ण घटना थी। इससे दोनों पक्षों में टकराव के हालात बनते जा रहे थे। समस्या सुलझाने के लिए सीमा पर दोनों देशों की सेना के कमाण्डरों के बीच चार बार फ्लैग मीटिंग हुई, जिसका कोई सकारात्मक नतीजा नहीं निकल सका। चीनी सेना चाहती थी कि पहले भारतीय सेना पीछे हटे और भारतीय सेना चाहती थी कि पहले चीनी सेना पीछे हटे।

दोनों अपनी मांग पर अड़े हुए थे और अन्ततः इस बात पर सहमति बनी कि दोंनों ही पक्ष एक साथ एक वक्त पर गतिरोध बिन्दु से पीछे हटेंगी। उल्लेखनीय है कि सन् 1954 में तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरु और चीनी प्रधानमंत्री चाउ एन लाई के बीच नई दिल्ली में सम्पन्न ऐतिहासिक पंचशील समझौते के बाद हिन्दी-चीनी भाई-भाई नारे की आड़ में चीन ने भारत की पीठ पर छुरा घोंपकर समझौते की छुपी कूटनीति से चौंका दिया था। पंचशील समझौता भारतीय नेताओं की आदर्शवादिता, स्वप्नदर्शिता, अदूरदर्शिता तथा चीनी विश्वासघात की कहानी बन कर रह गई। भारत को विश्वास नहीं हो रहा था कि कोई अभिन्न मित्र पड़ौसी होने का दंभ भरने वाला देश समझौते की आड़ में ऐसा भी कर सकता है, परन्तु 50 हजार वर्ग किमी जमीन भू-भाग गवांने के यथार्थ को नहीं बदला जा सकता। भारत-चीन सम्बन्ध पर व्यापक दृष्टि डालें तो पता चलता है कि पचास के दशक के बाद से सीमा विवाद पर एक अन्तहीन वाद-विवाद का संघर्ष चलता आ रहा है। चीन लगातार बीच-बीच में भारतीय भू-भाग के कुछ क्षेत्रों पर दावे का राग अलापता रहता है। आज दोनों मुल्क विश्व के सबसे अग्रणी विकासशील देशों की फेहरिस्त में शामिल है तथा दोनों एक-दूसरे को पीछे छोड़कर आगे निकलने की कोशिश कर रहे है। भारत व चीन की अर्थव्यवस्था दुनिया की क्रमशः दसवीं व दूसरी बड़ी अर्थव्यवस्था है तथा दोनो देशों के बीच लगभग 76 अरब डालर का द्विपक्षीय व्यापार होता है। हालांकि भारत को लगभग 41 अरब डालर का व्यापार घाटा है। सीमा विवाद पर तनाव दोनों ही देशों के दीर्घकालीन हितों के प्रतिकूल है।

शोध का उद्देश्य

1. भारत-चीन सीमा विवाद के विभिन्न बिन्दुओं का वर्णन करना।
2. विवाद के कारणों का तथ्यात्मक विश्लेषण करना।
3. समस्या से साधारण जनमानस व बुद्धजीवियों को रूबरू कराना।
4. प्रस्तावित समाधान।

शोध पद्धति-

शोध पत्र के प्रथम भाग में प्रस्तावना एवं शोध का उद्देश्य, दूसरे भाग में सीमा विवाद के विभिन्न बिन्दु एवं अन्तिम भाग में निष्कर्ष का वर्णन है। शोध पत्र को तैयार करने हेतु कई विद्वानों द्वारा लिखित शोध पत्र व पुस्तकों तथा इण्टरनेट की साइटों से जानकारी ली गई है।

भारत-चीन सीमा विवाद

भारत-चीन सीमा हिमालय पर्वतमाला की ऊंची एवं दुर्गम चोटियों के सहारे अफगानिस्तान की सीमा से प्रारम्भ होकर म्यांमार (बर्मा) की सीमा पिपछू दर्रे के पास तक जाती है। जिसकी कुल लम्बाई 4056 किमी. है। दरअसल जनवरी 1959 में चीन सरकार ने भारत के साथ पहली बार सीमा समस्या का 'श्रीगणेश' किया और सितम्बर 1959 में ही भारतीय क्षेत्र के विभिन्न सीमावर्ती प्रदेशों में लगभग 50,000 वर्गमील क्षेत्र पर अपना दावा किया जिसे उसने 1959 में अपने मानचित्र में दर्शाकर सिद्ध करने का प्रयास भी किया।**1** आगे चलकर यही 1962 के युद्ध की मुख्य वजह थी।

मैकमोहन रेखा

यह सर्वविदित है कि भारत और चीन के बीच

सीमा विवाद की मुख्य वजह मैकमोहन रेखा है। अप्रैल 1914 में भारत और तिब्बत तथा तिब्बत और चीन के बीच सीमा का निर्धारण करने के लिए शिमला में एक सम्मेलन हुआ, जिसमें भारत, चीन एवं तिब्बत के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसमें ब्रिटिश सरकार की ओर से भारत के विदेश सचिव आर्थर हेनरी मैकमोहन ने भाग लिया। इस सम्मेलन में यह निश्चय किया गया कि-

1. तिब्बत पर चीन का आधिपत्य बना रहेगा, लेकिन बाह्य तिब्बत को अपने कार्य में पूर्ण स्वतंत्रता होगी।
2. चीन तिब्बत के आन्तरिक मामलों में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करेगा।
3. चीन तिब्बत को अपने राज्य का सूबा भी घोषित नहीं करेगा।
4. तिब्बत का आन्तरिक व बाह्य तिब्बत में बंटवारा, बाह्य तिब्बत और भारत की ऊंची पर्वत श्रेणियों को सीमा मानकर एक नक़्शे में लाल पेंसिल से निशान लगा दिया गया। 11,00 किमी लम्बी मैकमोहन लाइन भूटान से हिमालय के सहारे-सहारे ब्रह्मपुत्र नदी के महान मोड़ तक जाती है। इस लाईन को भारत अपनी स्थाई सीमा रेखा मानता है। जबकि चीन का मानना है कि उसने शिमला समझौता 1914 हस्ताक्षर नहीं किये थे, इसलिए मैकमोहन रेखा को स्थाई सीमा रेखा मानने का प्रश्न ही नहीं उठता। उसका कहना है कि तिब्बत हमेशा से चीन का एक प्रान्त रहा है और प्रान्तीय सरकार को अन्तर्राष्ट्रीय संन्धि करने का कोई अधिकार नहीं होता है।**2**

भारत-चीन की सम्पूर्ण सीमा को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।**3**

1. पूर्वी सेक्टर- मैकमोहन रेखा के दक्षिण में स्थित लगभग 90,000 वर्ग किमी में फैले सम्पूर्ण अरुणाचल प्रदेश पर चीन अपना दावा करता है। 1937 के सर्वे आफ इण्डिया ने पहली बार अपने नक़्शे में मैकमोहन लाइन को आधिकारिक सीमा रेखा मानते हुए इस विवादित क्षेत्र को भारतीय क्षेत्र माना। लेकिन 1949 में चीनी क्रान्ति के बाद स्थापित साम्यवादी सरकार ने इस क्षेत्र पर अपना अधिकार जताना आरम्भ कर दिया और तब से लेकर अब तक यह दोनों देशों के बीच विवाद का मुद्दा बना हुआ है। इस क्षेत्र को भारत ने 1954 में पूर्वोत्तर सीमान्त एजेंसी (North-East Frontier Agency, NEFA), नेफा नाम दिया और 1972 में इसे केन्द्रशासित प्रदेश का दर्जा देकर इसका नाम अरुणाचल प्रदेश रखा गया**4** तथा 1987 को इसे पूर्ण राज्य का दर्जा प्रदान किया गया। उल्लेखनीय है कि 1962 के युद्ध में कामेंग डिविजन के अन्तर्गत भू-राजनीतिक एवं सामरिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण तवांग क्षेत्र पर चीन कब्जा करना चाहता था। अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम में स्थित तवांग उत्तर-पूर्व भारतीय राज्यों को शेष भारत से जोड़ने वाला मार्ग है।
2. मध्य भाग- भारत के हिमाचल प्रदेश एवं उत्तराखण्ड राज्य से चीन से लगी इस क्षेत्र में सीमा रेखा की कुल लम्बाई लगभग 545 किमी है। अर्थात शिपकी दर्रा से लिपुलेख दर्रा तक मध्य भाग के अन्तर्गत आता है। इस क्षेत्र में शिपकी ला, कोरिक इलाके, पुलाम, थाग ला, बाराहोती, कुंगरी-बिंगरी ला, लापथाल एवं सांघा के आसपास के इलाके विवादित हैं। शिपकी दर्रा (हिमाचल प्रदेश और तिब्बत की सीमा पर स्थित

है) तथा लिपुलेख दर्रा (उत्तराखण्ड और तिब्बत की सीमा पर स्थित है) प्रमुख व्यापारिक मार्ग हैं।

3. पश्चिमी भाग- पश्चिम क्षेत्र में भारत के जम्मू और कश्मीर राज्य की सीमा रेखा चीन के सिकियांग तथा तिब्बत से सम्पर्क करती है। जिसकी लम्बाई लगभग 1100 मील है। इस सीमा का निर्धारण एक संधि के द्वारा 1684 में हुआ था, लेकिन 1842 में जम्मू और कश्मीर राज्य के प्रतिनिधि, दलाईलामा एवं चीन के सम्राट के द्वारा पुनः सीमा निर्धारित की गई।**5** इस सेक्टर में भारत का दावा चीन के कब्जे वाला 38,000 वर्ग किमी. क्षेत्र अक्साई चीन पर है। अक्साई चीन 19वीं शताब्दी तक लद्दाख साम्राज्य का हिस्सा था, इसके बाद जब लद्दाख पर कश्मीर का कब्जा हो गया, तो अक्साई चीन भी कश्मीर साम्राज्य का हिस्सा बन गया। 5000 मी. की ऊंचाई पर स्थित तिब्बत पठार के इस हिस्से पर 1950 के दशक में चीन का कब्जा हो गया। चीन ने सन् 1956- 60 के बीच इस क्षेत्र से होते हुए 11,00 किमी. लम्बे राष्ट्रीय राजमार्ग-219 का निर्माण किया है जो तिब्बत को सिक्यांग से जोड़ता है। पाकिस्तान द्वारा 1963 के चीन-पाक समझौते के तहत काराकोरम दर्रे के पश्चिम में स्थित अपने कब्जे वाले कश्मीर का 5,180 वर्ग किमी भू-भाग चीन को सौंप दिया।**6** चीन अक्साई चीन के साथ सम्पूर्ण लद्दाख को तिब्बत का हिस्सा मानते हुए उस पर अपना दावा करता है। सन् 1962 के युद्ध के बाद सीमा समस्या सहित अन्य विवादों को हल करने की दिशा में तथा सम्बन्धों को सुधारने हेतु दोनों देशों द्वारा किये गये प्रयास अभी तक सार्थक नहीं हो पाये हैं। 1962 युद्ध के बाद से अब तक के परस्पर वार्ता का क्रम**7** -

1988- 34 साल बाद प्रधानमंत्री राजीव गांधी की चीन यात्रा, सीमा विवाद सुलझाने के लिए संयुक्त कार्यकारी दल बनाने पर सहमत।

1991- चीनी प्रधानमंत्री ली पेंग का भारत दौरा, मैत्रीपूर्ण विचार-विमर्श द्वारा सीमा समस्या हल करने की प्रतिबद्धता।

1993- प्रधानमंत्री नरसिंह राव की चीन यात्रा, सीमा पर शान्ति-सौहार्द बनाये रखने पर समझौता। चीनी और भारतीय कूटनीतिज्ञ एवं सैन्य अधिकारी शामिल हुए।

1995- दोनों देश पूर्वी सेक्टर में समद्रोंग चू वैली से सैन्य टुकड़ियां पीछे हटाने पर सहमत।

1996- चीनी प्रधानमंत्री जियांग जेमिन का भारत दौरा, सैन्य क्षेत्र में विश्वास बहाली के उपायों की स्थापना पर समझौता।

1997- संयुक्त कार्यकारी दल ने एक-दूसरे को विश्वास बहाली के उपायों के अनुसमर्थन संबंधी कागजात सौंपे।

1998- भारत द्वारा लद्दाख कैलास मानसरोवर मार्ग पुनः आरम्भ करने की घोषणा।

1999- करगिल संघर्ष के दौरान चीन की तटस्थता की नीति, भारत के साथ सुरक्षा तंत्र की स्थापना पर सहमत।

2000-प्रथम द्विपक्षीय वार्ता, सैन्य आदान-प्रदान बहाल हुआ।

2002- चीनी प्रधानमंत्री जू रोंगजी का भारत दौरा।

2003- सीमा मुद्दे के राजनीतिक समाधान हेतु विशेष प्रतिनिधि स्तरीय वार्ता।

2005- चीनी प्रधानमंत्री वेन जिया बाओ का भारत दौरा, सीमा विवाद हेतु राजनीतिक मानदण्डों और निर्देशक सिद्धांतो की स्थापना तथा सैन्य क्षेत्र में विश्वास बहाली के उपायों को लागू करने पर समझौता।

2006- 44 साल बाद सिक्किम स्थित नाथू ला दर्रा व्यापार के लिए पुनः खोलने पर सहमत।

2007- चीन का पुनः अरुणाचल प्रदेश पर दावा।

2009- प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का चीन दौरा, चीन ने मनमोहन सिंह के अरुणाचल दौरे के समय इसे विवादास्पद इलाका बताया और कड़ी आपत्ति जताई।

2010- चीन द्वारा उत्तरी कमाण्ड के प्रमुख लेफ्टि.जनरल जयसवाल को वीजा देने से इंकार, भारत ने चीन से सैन्य आदान-प्रदान निरस्त किया।

2012- चीनी प्रधानमंत्री जेन लियांग ली का भारत दौरा, सीमा संबंधी मामलों पर विचार-विनिमय।

2013- चीनी प्रधानमंत्री ली केकियांग का भारत दौरा, सीमा विवाद आपसी बातचीत से हल करने पर सहमति।

दोनों देशों द्वारा किये गये उपर्युक्त तमाम राजनीतिक प्रयास अभी तक सीमा समस्या का कोई स्थाई समाधान निकालने में सार्थक नहीं हो पाये हैं। वास्तविक नियन्त्रण रेखा को सकारात्मक रूप देने के लिए भारत निरन्तर प्रयास करता रहा है परन्तु चीन के प्रयास इस मामले में संतोषजनक नहीं रहे हैं। क्योंकि उसके द्वारा अधिकृत क्षेत्र पर वह चुप रहा है, तो प्रश्न उठता है कि किस कीमत पर हम चीन के साथ अच्छे मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित करना चाहते हैं।**8**

निष्कर्ष

भारत और चीन दोनों ही जनसंख्या की दृष्टि से विश्व के बड़े राष्ट्रों में से एक है और यह स्वाभाविक है कि दोनों के बीच मित्रता व सहयोग का होना एशियाई क्षेत्र में शान्ति स्थापना एवं विकास के लिए अति आवश्यक है। सिक्किम से लगी अन्तर्राष्ट्रीय सीमा को छोड़कर भारत-चीन सीमा क्षेत्र में कई इलाकों को लेकर विवाद है। इतिहास साक्षी है कि भारतीय सेनाओं ने कभी भी अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा को लांघकर किसी अन्य देश की सीमाओं में अनधिकृत ढंग से प्रवेष नहीं किया है। चीनी सेनाओं की बार-बार भारतीय सीमा में घुसपैठ क्या उसकी जान-बूझकर की गई विकृत विस्तारवादी मानसिकता को नहीं दर्शाता है। ऐसा नहीं है कि चीन का सिर्फ भारत से ही सीमा को लेकर विवाद हो, चीन से लगे लगभग सभी पड़ोसी देशों के साथ उसकी कमोबेश यही स्थिति है। वास्तविकता यह है कि चीन अपनी सैनिक एवं आर्थिक ताकत के दम पर क्षेत्र में वर्चस्व स्थापित करना चाहता है और दुनिया को दिखाना चाहता है कि वह एक महाशक्ति बन चुका है। चीन की शह पर ही उसका मित्र पाकिस्तान भी भारत के साथ सीमा समस्या को हल करने के प्रति कभी गंभीर दिखाई नहीं दिया। दोनों ही मुल्क समस्याओं को यथास्थिति में रखकर सीमा में तनाव उत्पन्न कर भारत का ध्यान समय-समय पर बांटना चाहते हैं। आज भारतीय बाजार चीनी सामानों से भरा पड़ा है। उसने अपने सस्ते श्रम, बेहतर तकनीकी विकास एवं कूटनीतिक ढंग से पहले ही भारत के कई छोटे-बड़े कारखानों को बंद करा

दिया है। भारतीय विदेश नीति बेअसर एवं बेजान सी दिखाई दे रही है। भारत न केवल चीन को लेकर अपितु सभी पड़ोसी देशों के प्रति जरूरत से ज्यादा रक्षात्मक रवैया अपनाता आ रहा है। यह उसकी बड़ी ही दुर्भाग्यपूर्ण नीति रही है। आज नेपाल, श्रीलंका और बांगलादेश सरीखे मुल्क भी भारत को आंखे दिखा रहे हैं। भारत की उदारता, उदासीनता एवं नरम रवैया चीन जैसे आक्रामक विचारधारा के देश के प्रति उचित नहीं है। सीमान्त क्षेत्रों में आधारभूत ढांचागत विकास कार्य अत्यंत धीमी गति से हो रहे हैं जबकि इसके ठीक उलट चीन अपने क्षेत्र में सड़क, संचार एवं अन्य बुनियादी विकास का जाल सा बिझाता जा रहा है। एक उच्च मनोबल युक्त सेना ही युद्ध में विजय प्राप्त कर सकती है और यातायात व संचार के साधनों के बिना आधुनिक युद्धों में न मनोबल बढ़ाया जा सकता है और न ही युद्ध में विजय की कल्पना की जा सकती है। 1962 के युद्ध में चीन से पराजय की यह एक बड़ी वजह थी। समुद्र के समान शांत एवं गंभीर दिखाई दे रहे सौहार्दपूर्ण एवं मित्रतापूर्ण रिश्तों के वातावरण में भी राष्ट्रों के जीवन में तनाव, टकराव एवं युद्ध जैसी स्थिति कभी भी किसी भी वजह से पनप सकती है और भारत व चीन के बीच तो रिश्तों का समुद्र कभी शांत व गंभीर हुआ ही नहीं है। अमेरिकी एवं यूरोपीय सुरक्षा शोधकर्ता इस बात पर बार-बार जोर देते आ रहे हैं कि चीन भारत से सीमा समस्या को लेकर कभी भी उलझ सकता है। तमाम अंदेशे एवं संशय के बावजूद दोनों ही देशों को परस्पर सारे मतभेद एवं कड़वाहट को भुलाकर आवाम की बेहतरी के लिए संवाद के जरिये सीमा समस्या सहित सभी विवादों का कोई स्थाई समाधान निकालना चाहिए। यही दोनों देशों के लिए हितकर है। अमेरिका और कनाडा के बीच संबंधों का श्रेष्ठ स्पष्टीकरण मैकनामारा के इस कथन से झलकता है- हम दो आधुनिक राष्ट्र हैं, प्रावैधिकी की दृष्टि से उच्च विकसित, विशाल भू-भाग वाले, दोनों प्राकृतिक साधनों से समृद्ध तथा सैनिक दृष्टि से सशक्त हैं, दोनों के बीच हजारों मील लम्बी सीमा है, जिस पर कोई रोक-टोक नहीं है, फिर भी हम ऐसी स्थिति की कल्पना नहीं कर सकते जिससे हम एक-दूसरे के विरुद्ध युद्ध कर सकें। इतने मधुर संबंध दो विकसित आधुनिक देशों के बीच हो सकते है तब भारत-चीन से भी ऐसे ही परस्पर रिश्तों की उम्मीद क्यों नहीं की जा सकती !

संदर्भ

1. सिंह, लल्लन जी -राष्ट्रीय रक्षा और सुरक्षा, प्रकाश बुक डिपा बरेली, उ0प्र0, पृष्ठ-107
2. नेगी, अवतार सिंह -भारत-चीन सीमा विवाद, तूणीर, अंक-13 वर्ष 15 अगस्त 2010, रक्षा अध्ययन शोध समिति महाराजगंज, उ0प्र0, पृष्ठ-123-124
3. शुक्ल, कृष्णानन्द -हिमालय और भारतीय सुरक्षा, तूणीर, अंक-13 वर्ष 15 अगस्त 2010, रक्षा अध्ययन शोध समिति महाराजगंज, उ0प्र0, पृष्ठ-113
4. पूर्वोक्त संदर्भ सं. 2, पृष्ठ-125
5. पूर्वोक्त संदर्भ सं. 1, पृष्ठ-108
6. पूर्वोक्त संदर्भ सं. 2, पृष्ठ-125
7. www.dainiktribuneonline.com, article by ashok tuteja, 27 nov.2012
8. शर्मा, हरवीर -भारत की सुरक्षा समस्या, संस्करण 1998, हर्यम्बुज प्रकाशन, मेरठ, पृष्ठ-128